E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(1): 373-376
Received: 14-11-2020
Accepted: 25-12-2020

उमाशंकर कुशवाहा
शोधार्थी शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. अखिलेश कुमार श्रीवास्तव
प्राचार्य, श्रीराम कालेज, रौरा जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
उमाशंकर कुशवाहा
शोधार्थी शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सतना जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

उमाशंकर कुशवाहा एवं डॉ. अखिलेश कुमार श्रीवास्तव

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र सतना जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। शोध क्षेत्र के शहरी क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 33.25 तथा मानक विचलन 7.08 है। ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 32.19 तथा मानक विचलन 7.30 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 1.87 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.64 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.33 से कम है। अतः शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मुख्यशब्दः सतना जिला, शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र, किशोरावस्था, सूचना तकनीकी, शैक्षिक उपलब्धि।

1. प्रस्तावना
आज का युग विज्ञान एवं तकनीकी का युग है। आधुनिक समय में तकनीकी का प्रयोग बड़ी तेजी से हो रहा है। इसका प्रयोग सभी क्षेत्रों जैसेः–व्यापार, उद्योग, रक्षा, चिकित्सा, प्रशासन तथा मनोरंजन इत्यादि में बहुतायत से किया जा रहा है। तकनीकी के प्रयोग से कार्य प्रभावी ढंग से होते हैं। आज सूचना क्रान्ति के युग में हैं, जहाँ संचार माध्यम लोगों के बीच जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। अतः अधिगम प्रक्रिया को बेहतर व प्रभावशाली बनाने के उद्देश्य से तकनीकी को शिक्षा में समाहित किया गया है। तकनीकी का प्रभाव आज शिक्षा के सभी क्षेत्रों में दिखाई दे रहा है। शिक्षा में तकनीकी का प्रयोग सर्वप्रथम 1926 में अमेरिका में सिडनी प्रेस्सी ने शिक्षण मशीन के द्वारा किया था। 'शैक्षिक तकनीकी' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 1950 में यूनाइटेड किंगडम में ब्रायनमोर जोन्स रिपोर्ट में किया गया था।

शैक्षिक तकनीकी वैज्ञानिक आविष्कारों एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रयोग है, जिसके फलस्वरूप शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके। इसके द्वारा शिक्षा को अधिक रोचक, सरल एवं प्रभावशाली बनाया जा सकता है। शैक्षिक तकनीकी शिक्षा की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाने का प्रयास करती है। यह न केवल शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाती है अपितु यह शिक्षा के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः शैक्षिक तकनीकी ऐसा विज्ञान है, जिसके द्वारा शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यों की अधिकतम प्राप्ति के लिए नई–नई व्यूह रचनाओं का विकास किया जा सकता है।

वर्तमान समय में शैक्षिक तकनीकी की उपयोगिता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। शिक्षा के हर क्षेत्र में इसका लाभ लिया जा रहा है। शैक्षिक तकनीकी ने शिक्षक के कार्य को अत्यंत आसान बना दिया है। इसकी सहायता से शिक्षक कक्षा में पाठ्य–वस्तु के प्रस्तुतीकरण को अधिक रोचक, ग्राह्य, सरल व प्रभावशाली बना सकता है।

कुछ लोगों में यह भ्रम है कि शैक्षिक तकनीकी के नए आविष्कारों, जैसे– कम्प्यूटर सह–अनुदेशन, कम्प्यूटर आधारित शिक्षण आदि के प्रयोग से शिक्षक की भूमिका समाप्त हो जायेगी। सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली मशीनीकृत हो जायेगी, शिक्षक की भूमिका केवल पाठ्य–वस्तु तैयार करने तक ही सीमित हो जायेगी, परन्तु यह एक गलत धारणा है। शैक्षिक तकनीकी व शिक्षक एक दूसरे के पूरक हैं। शैक्षिक तकनीकी ने शिक्षा का विस्तार किया है। इसकी सहायता से शिक्षक कम समय व शक्ति में ही अधिक से अधिक सूचनाओं को छात्र–छात्राओं तक पहुँचा सकता है।

शिक्षक अपने समय का सदुपयोग सूक्ष्म शिक्षण, उपचारात्मक शिक्षण, छात्र–छात्राओं की समस्याओं को दूर करने तथा निर्देशन व परामर्श देने में करेंगे। इससे शिक्षक एवं शिक्षण की भूमिका अधिक सुदृढ़ हुई है। शिक्षण के भावात्मक पक्ष को केवल कक्षा–शैक्षिक तकनीकी की सहायता से और भी प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है।

शैक्षिक तकनीकी का अर्थ समझने से पहले तकनीकी का अर्थ समझना आवश्यक है। इसका कारण यह है कि विज्ञान ने सृजन तथा निर्माण को जितना भी बढ़ावा दिया है वह सब तकनीकी के माध्यम से ही सम्भव हुआ है। अमरीका तथा रूस आदि विकसित राष्ट्रों की प्रगति केवल विज्ञान तथा तकनीकी के बल पर ही हुई है। अब हमारे देश में भी विज्ञान एवं तकनीकी का प्रयोग किया जा रहा है जिससे हमारा देश भी अमरीका तथा रूस की भाँति पूर्णरूपेण विकसित हो जाय। ओफिश महोदय का मत है कि तकनीकी, विज्ञान का कला में प्रयोग है। इस प्रकार तकनीकी का आधार विज्ञान है तथा इसका कार्य है प्रयोगात्मक कला का विकास करना। स्मरण रहे कि तकनीकी जहाँ एक ओर नवीन संगठनों तथा प्रतिमानों एवं डिजाइनों का निर्माण करती है वहाँ दूसरी ओर यह मानव तथा मशीन प्रणाली की क्रिया को गठित भी करती है। ध्यान देने की बात है कि तकनीकी न तो केवल मशीन मात्र ही है और न ही मनुष्य प्रणाली है वरन् यह इन सब का साधन एवं सार है। अतः इसको केवंल मशीन तक ही सीमित रखना भूल होगी। संक्षेप में तकनीकी कला में विज्ञान का प्रयोग है तथा इसका निर्माण से प्रत्यय सम्बन्ध है। दूसरे शब्दों में तकनीकी का अर्थ विज्ञान के ज्ञान को दैनिक जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रयोग करना है अथवा वैज्ञानिक ज्ञान के व्यवहार रूप को तकनीकी कहते हैं। इस प्रकार जब वैज्ञानिक ज्ञान को व्यावहारिक कार्यों में किया जाता है तो उसे तकनीकी कहते हैं।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शैक्षिक तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में एक विकासशील, प्रगतिशील तथा महत्वपूर्ण अभियान्त्रिकी है, आधुनिक मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, इन्जीनियर, प्रशासनिक सिद्धान्त, गणित अन्य सामाजिक एवं भौतिक विज्ञानों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों एवं नियमों की सहायता से शिक्षण तथा अधिगम के विभिन्न पदों का विश्लेषण तथा सुधार करती है एवं उन्हें पुनः प्रतिमानित करके उनका आवश्यकतानुसार नए सिरे से निर्माण करते हुए शैक्षिक कुशलता का विकास करती है। यह कक्षागत शिक्षण में ही नहीं वरन् विद्यालय के सम्पूर्ण वातावरण, शैक्षिक प्रशासन तथा शैक्षिक संदर्भों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्दश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है :–

- सतना जिले में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की जानकारी प्राप्त करना।
- शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

परिकल्पना को अगर हम शोध की भाषा में समझे तो यह शोध कार्य को नई दिशा प्रदान करती है। यह किसी समस्या का समाधान करती है। परिकल्पना द्वारा शोधकर्ता को समस्या को सही रूप से समझने में सहायता मिलती है, तथा समस्या का रूप स्पष्ट हो जाता है। परिकल्पना से तात्पर्य उस संभावित उत्तर से होता है, जो समस्या समाधान के लिए हम सोचते है। परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों के कार्यक्रम सम्बन्धी परीक्षण योग कथन है। परिकल्पना को संभावित समाधान या सिद्धान्त भी कहा जाता है, जिसे अस्थाई रूप से सही मानकर उसकी पुष्टि करने का प्रयास किया जाता है। परिकल्पना केवल शोधकार्य को दिशा प्रदान नही करती है वरन समुचित उपकरण परीक्षण तय प्रविधियों को भी बताने का प्रयास करती है।

शोध कार्य की परिकल्पना निम्नवत् है–

1. शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला सतना है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना (सोहावल), मझगवाँ, रामपुर बघेलान, नागौद, उचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैंहर है। अतः जिला अन्तर्गत स्थित उच्चतर माध्यमिक स्तर की विद्यालय इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित किये गये है।

चूंकि सतना जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए जिले के सभी विकासखण्डों से 4–4 विद्यालय कुल 32 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु किया जाएगा। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा जायेगा कि सभी विकासखण्डों के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सके तथा ये सभी विद्यालय शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संवंधित हो।

शोध कार्य के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 20–20 छात्र कुल 640 छात्रों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार पद्धति हेतु किया जाएगा। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधिः** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– डमंदए प्रतिशत (%), S.D., 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

शोधार्थी ने न्यादर्श में चयनित शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली व परीक्षाफल के आधार पर किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध

पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण तथा शोध कार्य करने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, डॉ. अखिलेश कुमार (2021)[1], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[2], सिंह, दुर्ग विजय पाल एवं सिंह, जय (2016)[3], कुमार, अरविन्द एवं सिंह, जय (2016)[4], पाण्डेय, के.पी., (1985)[5], गुप्ता एस.पी. (2001)[6], मेहता, सी. (1970)[7], ने शोध विधि एवं शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. सतना जिले का सामान्य परिचय

सतना जिला 23.58°–25.12° उत्तरी अक्षांश 80.12 – 81.23° पूर्वी देशान्तर पर स्थिति है। जिले समुद्र तल से ऊँचाई 317 मी. है, नागौद 626 मी., अमरपाटन और मैहर 537.06 मीटर है। सतना मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्वी सीमा के मध्य स्थित वर्तमान रीवा संभाग का एक महत्वपूर्ण व्यवसायिक एवं औद्योगिक प्रधान जिला है। जिले के उत्तर में उत्तर प्रदेश का बाँदा जिला पूर्व में रीवा एवं सीधी जिला, दक्षिण में शहडोल व जबलपुर जिला, तथा पश्चिम में पन्ना जिला स्थित है। जिला अपनी धार्मिक विरासतों, औद्योगिक संस्थानों, सांस्कृतिक ऐतिहासिक परिदृष्यों, प्रमुख वनोपज एवं खनिज के कारण सर्वोच्च शिखर पर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1: शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

सारणी 1: शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में सार्थकता का स्तर			
		शहरी		ग्रामीण	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 अंक से ऊपर किन्तु 20 अंक से कम (सूचना तकनीकी के प्रभाव का शैक्षिक उपलब्धि)	2	0.63	3	0.94
2.	20 अंक से अधिक किन्तु 30 अंक से कम (सूचना तकनीकी के प्रभाव का शैक्षिक उपलब्धि)	107	33.44	134	41.88
3.	30 अंक से अधिक किन्तु 40 अंक से कम (सूचना तकनीकी के प्रभाव का शैक्षिक उपलब्धि)	156	48.75	133	41.56
4.	40 अंक से अधिक किन्तु 50 अंक से कम (सूचना तकनीकी के प्रभाव का शैक्षिक उपलब्धि)	55	17.19	50	15.63

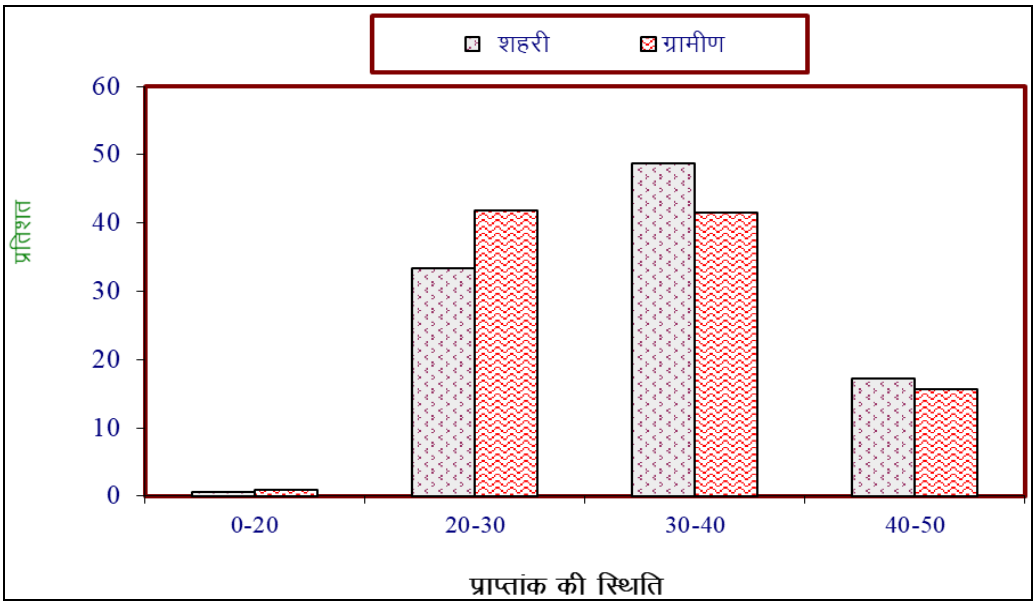

आरेख 1: शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 एवं आरेख क्र. 1 में न्यादर्श हेतु चयनित शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि की जानकारी का संकलन किया गया है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े यह दर्शाते है कि, शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों पर न्यादर्श हेतु चयनित कुल 640 विद्यार्थियों में से 02 शहरी एवं 01 ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में 20 से कम अंक, 107 शहरी एवं 134 ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में 20 से 30 के मध्य अंक, 156 शहरी एवं 133 ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में 30 से 40 के मध्य अंक और

55 शहरी एवं 50 ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में 40 से 50 अंक प्राप्त कर ली है।

इस प्रकार इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में से 0.63 प्रतिशत शहरी एवं 0.94 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में 20 से कम अंक, 33.44 प्रतिशत शहरी एवं 41.88 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में 20 से 30 के मध्य अंक, 48.75 प्रतिशत छात्र एवं 41.56 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में 30 से 40 के मध्य अंक और 17.19 प्रतिशत छात्र एवं 15.63 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में 40 से 50 अंक प्राप्त कर ली है।

सारणी 2: शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि का सांख्यिकीय विश्लेषण

समूह		छात्र	छात्राएँ
समूह की संख्या (N)		320	320
मध्यमान (M)		33.25	32.19
मानक विचलन (SD)		7.08	7.30
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		1.87	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त सारणी में शोध क्षेत्र के शहरी क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 33.25 तथा मानक विचलन 7.08 है। ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 32.19 तथा मानक विचलन 7. 30 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (C.R. Test) किया गया, जिसमें CR का मान 1.87 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.64 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.33 से कम है। अतः शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इस प्रकार शोधार्थी की परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

अतः परिकल्पना निरसित होती है।

निष्कर्ष

किसी भी शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष किये गये शोध कार्य को मान्यता प्रदान करते है। प्रस्तुत शोध के प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर प्राप्त शोध निष्कर्षो का विवरण निम्नानुसार हैं–

1. शोध क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में से 0.63 प्रतिशत शहरी एवं 0.94 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में 20 से कम अंक, 33.44 प्रतिशत शहरी एवं 41.88 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में 20 से 30 के मध्य अंक, 48.75 प्रतिशत छात्र एवं 41.56 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में 30 से 40 के मध्य अंक और 17.19 प्रतिशत छात्र एवं 15.63 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में 40 से 50 अंक प्राप्त कर ली है।
2. शोध क्षेत्र के शहरी क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 33.25 तथा मानक विचलन 7.08 है। ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि का स्तर औसत 32.19 तथा मानक विचलन 7.30 है।
3. शोध क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में सूचना तकनीकी के प्रभाव का किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सन्दर्भ

1. कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, डॉ. अखिलेश कुमार – सतना जिले में किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं में मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन International Journal of Applied Research 2021;7(1):400-403.
2. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. –''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें'' (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
3. सिंह, दुर्ग विजय पाल एवं सिंह, जय. आगरा जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी प्रभाव का अध्ययन International Journal of Multidisciplinary Education and Research 2016;1(9):64-67.
4. कुमार, अरविन्द एवं सिंह, जय, आजमगढ़ जिले के जिले के हाई स्कूल स्तर पर शैक्षिक तकनीकी प्रक्रिया का विद्यार्थियों के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन International Journal of Multidisciplinary Education and Research 2016;1(10):32-34.-
5. पाण्डेय, के.पी. – ''मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1985.
6. गुप्ता एस.पी. – ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण, 2001.
7. मेहता, सी. – 'नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.